Dr. Sangita Kumari Saha
B.A. D-I (H) 1st paper.

Cannon-Bard Theory of Emotion

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन मूलतः Cannon (1927) द्वारा किया गया इसके पश्चात् बार्ड (1934) ने इनका अपने अध्ययनों के आधार पर समर्थन किया। अतः इस सिद्धान्त का नाम दोनों मनोवैज्ञानिकों के नाम के आधार पर रखा गया जो Cannon-Bard theory के नाम से प्रसिद्ध है। इस सिद्धान्त के अनुसार संवेग का कारण hypothalamus है जिसका स्थान central Nervous System के भाग Cerebrum तथा Thalamus के नीचे है। संवेग में hypothalamus तथा Thalamus के इस महत्व के कारण ही इस सिद्धान्त का नाम hypothalamic theory or thalamic भी रखा गया है। इसे केन्द्रीय सिद्धान्त भी कहा जाता है क्योंकि इसमें Central nervous System का अधिक महत्व होता है।

इस सिद्धान्त के अनुसार संवेग उत्पन्न करनेवाले उद्दीपक द्वारा ज्ञानेन्द्रियों के उत्तेजित होने के बाद उसमें तंत्रिका आवेग उत्पन्न होता है जो Cerebrum में पहुँचता है प्रमस्तिष्क में आने के पहले sensory nerve impulse थैलेमस एवं हाइपोथैलेमस होकर गुजरते हैं। इनसे हाइपोथैलमस में अभी क्रियाएँ पूर्णतः उत्पन्न नहीं होती हैं क्योंकि इनके ऊपर प्रमस्तिष्क वल्क cerebral cortex का नियंत्रण होता है। जब तंत्रिका आवेग प्रमस्तिष्क वल्क में पहुँचकर हाइपोथैलेमस की क्रियाओं पर से वल्क के अवरोध को हटाने के लिए तंत्रिका आवेग भेजता है, तो थैलेमस या हाइपोथैलेमस पूर्ण रूप से क्रियाशील हो जाता है और एक साथ दो दिशाओं में तंत्रिका आवेग चलता है। कुछ खास-खास परिस्थिति में प्रमस्तिष्क वल्क में अपने आप उत्पन्न होने वाले तंत्रिका आवेग भी हाइपोथैलेमस या थैलेमस में आते हैं जिससे वह और भी अधिक तेजी से क्रियाशील हो जाता है। जैसे :- जब कोई पहले की emotion-laden idea अचानक व्यक्ति के प्रमस्तिष्क वल्क में आ जाता है केवल तंत्रिका आवेग के रूप में यह विचार हाइपोथैलेमस में पहुँचता है जिससे वह और भी तेजी से क्रियाशील हो जाता है।

एक दिशा में तंत्रिका आवेग अन्तरांग में तथा हाथ पैर की मांसपेशियों में पहुँचता है तथा दूसरी दिशा वह है जिसमें ऊपरी तंत्रिका आवेग हाइपोथैलेमस से Cerebral Cortex

में पहुँचता है।

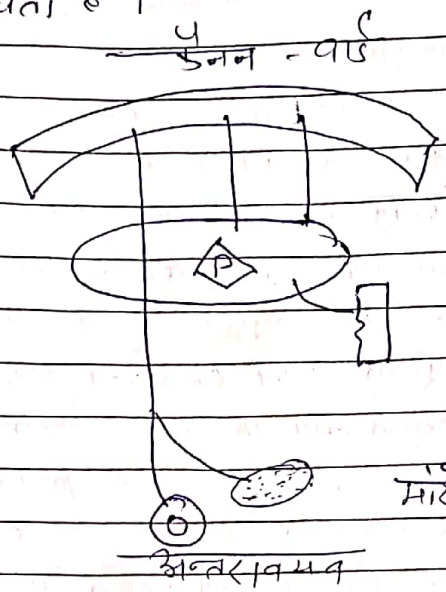

जब तंत्रिका आवेग अन्तरांग तथा हाथ पैर की मांसपेशियों में पहुँचता है तो उससे सांवेगिक व्यवहार उत्पन्न होते हैं दूसरी तरफ जब तंत्रिका आवेग प्रमस्तिष्क वल्क में पहुँचता है तो इसमें व्यक्तियों को सांवेगिक अनुभूति होती है।

इससे स्पष्ट है कि सांवेगिक व्यवहार तथा अनुभूति दोनों एक साथ ही होते हैं न कि सांवेगिक परिवर्तन या सांवेगिक व्यवहार पर सांवेगिक अनुभूति निर्भर करती है। जैसा कि जेम्स लांजे सिद्धान्त में कहा गया।

Cannon - Bard Theory के अनुसार संवेग उत्पन्न होने में निम्न Steps होते हैं।

(i) संवेग उत्पन्न होने के लिए किसी उद्दीपक द्वारा Sense organs को उत्तेजित होना अनिवार्य है।

(ii) ज्ञानेन्द्रिय से तंत्रिका आवेग हाइपोथैलेमस होता हुआ Cerebral Cortex में पहुँचता है।

(iii) प्रमस्तिष्क वल्क हाइपोथैलेमस पर से अपना नियंत्रण कम कर देता है।

(iv) हाइपोथैलेमस पूर्ण रूपेण क्रियाशील हो जाता है।

(v) हाइपोथैलेमस के क्रियाशील होने पर तंत्रिका आवेग दो दिशा में यानि ऊपर की दिशा में अर्थात् प्रमस्तिष्क वल्क की ओर तथा नीचे की दिशा में अन्तरांग तथा कंकाल शारीरिक

अंगों की मांसपेशीयों की ओर एक साथ जाते हैं तंत्रिका आवेग को cortex में पहुंचने पर संवेग का अनुभव होता है। तथा अंतरांग तथा मांसपेशीयों में तंत्रिका आवेग के पहुंचने पर संवेगात्मक व्यवहार या शारीरिक परिवर्तन होता है।

Cannon and Bard ने कई प्रयोग बिल्ली तथा कुत्ते पर किये हैं जिनमें इन पशुओं के हाइपोथैलेमस को काटकर निकाल दिया गया या उसमें एक छोटा घाव कर दिया गया। ऐसा होने के बाद पशुओं में किसी प्रकार का संवेग होते नहीं पाया गया। यहांतक कि जब एक कुत्ते को हाइपोथैलेमस को आपरेशन के द्वारा निकालकर उसके सामने बिल्ली को लाया गया तो कुत्ता शांत भाव से बिना क्रोध दिखलाये चुपचाप बैठा रहा। इस तरह के प्रयोग से स्पष्ट हो जाता है कि हाइपोथैलमस संवेग का origin point है।

आलोचना ->

* Cannon-Bard Theory के अनुसार संवेग का स्थान सिर्फ Hypothalamus or Thalamus है परन्तु सच्चाई यह है कि संवेग की उत्पत्ति में Hypothalamus का महत्व diffuse है, स्पष्ट नहीं।

Masserman (1943) के शब्दों में इस प्रकार कहा जा सकता है - Hypothalamic Stimulation से उत्पन्न क्रियाएं यांत्रिक diffuse, Stereotype, Stimulus bound होते हैं तथा इनका कोई सांवेगिक अर्थ नहीं मालूम पड़ता है।

* Masserman की आलोचना से यह भी स्पष्ट है कि संवेग में मस्तिष्क के अन्य भाग भी योगदान करते हैं। ऐसा कहने का आधार यह भी है कि प्रायः हमें संवेग की अनुभूति स्पष्ट रूप से होती है यदि सिर्फ Hypothalamus द्वारा ही संवेग की उत्पत्ति होती तो वह अस्पष्ट होता।

Scanned with CamScanner

King & Meyer 1958 & Brady (1960) ने एक प्रयोग कर दिखाया कि मस्तिष्क के अन्य भाग जैसे Limbic System, amygdala तथा Septal area आदि उत्तेजित करने पर व्यक्ति में संवेग होते पाया गया है और इन हिस्सों को चोपल कर देने से संवेग में कमी होती है।

इन आलोचना के बावजूद भी Cannon-Bard का Theory आज भी एक प्रमुख सिद्धांत है क्योंकि इस सिद्धांत के अनुसार Hypothalamus तथा Thalamus संवेग का उद्गम बिन्दू है जो अधिक तर मनोवैज्ञानिकों को मान्य है।

Scanned with CamScanner